उत्तर प्रदेश

निर्यातक प्रदेश

निर्यात विवरण एवं परिदृश्य

निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो, उत्तर प्रदेश, लखनऊ

निर्यात में वृद्धि हमारा संकल्प

- राज्य से निर्यात बढ़ाने के लिये ड्राई पोर्ट की स्थापना
- निवेश में वद्धि के उद्देश्य से 6 आई.टी. पार्क की स्थापना
- प्रदेश के प्रमुख नगरों में स्थायी प्रदर्शनी/हाट एवं निर्यात केन्द्रों की स्थापना
- राज्य में उपयुक्त स्थानों पर पैकेजिंग, लेबलिंग और डिजाइनिंग, अनुसंधान एवं विकास जैसी सुविधाओं के साथ–साथ खाद्य प्रसंस्करण पार्कों की स्थापना
- एयर कार्गो सुविधायें उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य में नए हवाई अड्डे की स्थापना

निर्यात वृद्धि हेतु समर्पित शासकीय निकाय के रूप में निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो का गठन करने वाले राज्यों में उत्तर प्रदेश अग्रणी है। निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो का उद्देश्य प्रदेश से निर्यात वृद्वि हेतु प्रभावी कदम उठाना है। यह निर्यातकों के साथ–साथ निर्यात प्रोत्साहन परिषदों, एजेन्सियों, निर्यात संघों, राज्य और केन्द्र सरकार के सम्बन्धित निकायों आदि से समन्वय करते हुए निर्यात संवर्धन हेतु कार्य करता है। ब्यूरो निर्यात प्रकियाओं में निर्यातकों को सहायता, राज्य सरकार एवं भारत सरकार द्वारा दी जाने वाली विभिन्न सुविधाएं और सहायता प्रदान करने के लिये समन्वय करता है। निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो, निर्यात से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में आ रही कठिनाईयों के समाधान तथा निर्यात संबंधी बुनियादी सुविधाओं की कमी को चिन्हित कर उनको पूर्ण करता है।

प्रशासनिक संरचना

लक्ष्य	• प्रति पांच वर्ष में प्रदेश से होने वाले निर्यात को दो गुना करना
उद्देश्य	• निर्यात प्रोत्साहन हेतु सभी सरकारी विभागों के साथ समन्वय कर प्रभावी कदम उठाना • निर्यातकों के लिये अनुकूल माहौल प्रदान करना • निर्यातकों के साथ–साथ विभिन्न निर्यात संवर्धन निकायों के साथ समन्वय करना • निय केन्द्रीय एजेंसियों द्वारा दी जाने वाली विभिन्न सुविधाओं और सहायता प्राप्त करने हेतु निर्यातकों को सहयोग प्रदान करना • निर्यात नीति मामलों और निर्यात की विविध समस्याओं का फालोअप सुनिश्चित करना • निर्यात वृद्धि हेतु प्रोत्साहन सुविधाओं/योजनाओं और वित्तीय प्रोत्साहन जैसे उपायों को लागू करना
रणनीति	• राज्य से निर्यात को बढ़ावा देने के लिये एक संस्थागत तंत्र तैयार करना • निर्यातोन्मुखी क्षेत्रों मे स्थानीय मांग के अनुरूप विभिन्न निर्यात विषयों पर सेमिनार/कार्यशालाओं तथा बायर सेलर मीट का आयोजन • निर्यात प्रोत्साहन हेतु सरकार के अधिकारियों तथा निर्यातकों के प्रतिनिधिमंडल द्वारा सम्भावनाशील देशों तथा अग्रणी राज्यों का नियमित अन्तराल पर एक्सपोजर विजिट/स्टडी टूर आयोजित करना
अवसर	• सर्वाधिक युवा एवं तकनीकी रूप से दक्ष प्रचुर मानव संसाधन • भौगोलिक एवं सांस्कृतिक वैविध्य से परिपूर्ण उत्पादों की बहुल्लता • उभरता हुआ विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्र • विश्व की प्रमुख अग्रणी औद्योगिक इकाईयों के साथ प्रौद्योगिकी टाई–अप एवं प्रदेश में इकाईयों की स्थापना • उत्पाद विविधता तथा अभिनव तकनीकी समन्वय से विकसित देशों यू.एस.ए., यू.के., कनाडा, फ्रांस, इटली, जापान, आस्ट्रेलिया के साथ ही दक्षिण अमेरिका, अफ्रीका एवं खाड़ी देशों में प्रदेश के विभिन्न उत्पादों में बढ़ती रूचि

राष्ट्रीय निर्यात में उत्तर प्रदेश का योगदान

- हस्तशिल्प : 44 प्रतिशत
- प्रसंस्कृत मांस (प्रोसेस्ड मीट) : 41 प्रतिशत
- कालीन (कारपेट) : 39 प्रतिशत
- चर्म एवं चर्म उत्पाद : 26 प्रतिशत

वर्ष 2016–17 में प्रदेश के निर्यात के उल्लेखनीय तथ्य

- प्रदेश का कुल निर्यात : 84282.89 करोड़
- देश के निर्यात में योगदान : 4.55 प्रतिशत
- प्रदेश की निर्यात वृद्धि दर : 3.77 प्रतिशत
- सर्वाधिक निर्यात करने वाले राज्यों में स्थान : पॉचवां
- भू–आबद्व राज्यों में स्थान : प्रथम

प्रमुख निर्यात उत्पादों में राष्ट्रीय स्तर पर प्रदेश की स्थिति

प्रथम

- कंज्यूमर इलेक्ट्रानिक्स
- हैण्डमेड कार्पेट
- सैडलरी एंड हार्नेस
- बफैलो मीट
- नॉन फेरेस इण्डस्ट्रियल मेटल एण्ड प्रोडक्ट्स
- सिल्क कार्पेट

द्वितीय

- स्पोर्ट्स गुड्स
- फिनिश्ड लेदर
- ग्लास व ग्लास वेयर
- प्लाईवुड एण्ड एलाईड प्रोडक्ट्स
- लेदर फुटवियर एण्ड कम्पोनेन्ट
- रेडीमेड गारमेन्टस/मैन मेड फाइबर्स

तृतीय

- डेरी उत्पाद
- सिल्क रेडीमेड गार्मेन्ट्स
- जूट फ्लोर कवरिंग
- आयुष व हर्बल प्रोडक्ट्स
- लेदर गारमेन्ट्स व गुड्स
- कॉपर व कॉपर उत्पाद
- रबर व कैनवस फुटवियर

चतुर्थ

- पेपर एवं पेपर बोर्ड उत्पाद
- इंडस्ट्रियल मशीनरी फार डेयरी इंडस्ट्री
- क्रेन लिफ्ट्स व विन्चेज़
- एसेन्सियल आयल्स
- बासमती राईस
- कम्प्यूटर हार्डवेयर एण्ड पेरीफेरल

उत्तर प्रदेश से निर्यात

वर्ष 2016-17

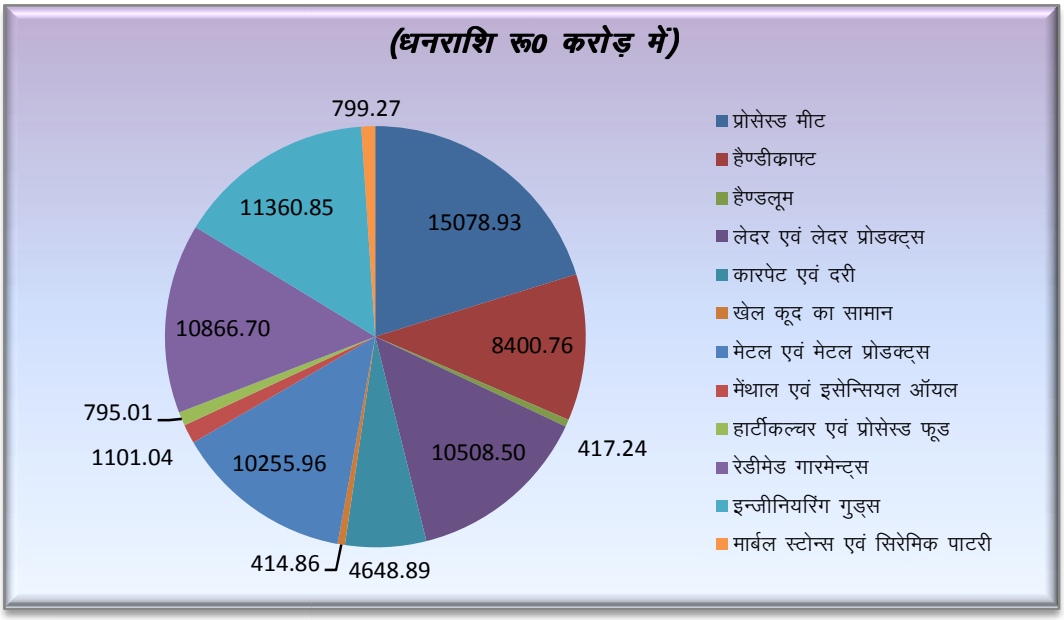

राष्ट्रीय निर्यात के सापेक्ष प्रदेश के निर्यात की तुलनात्मक स्थिति

वर्ष 2016-17

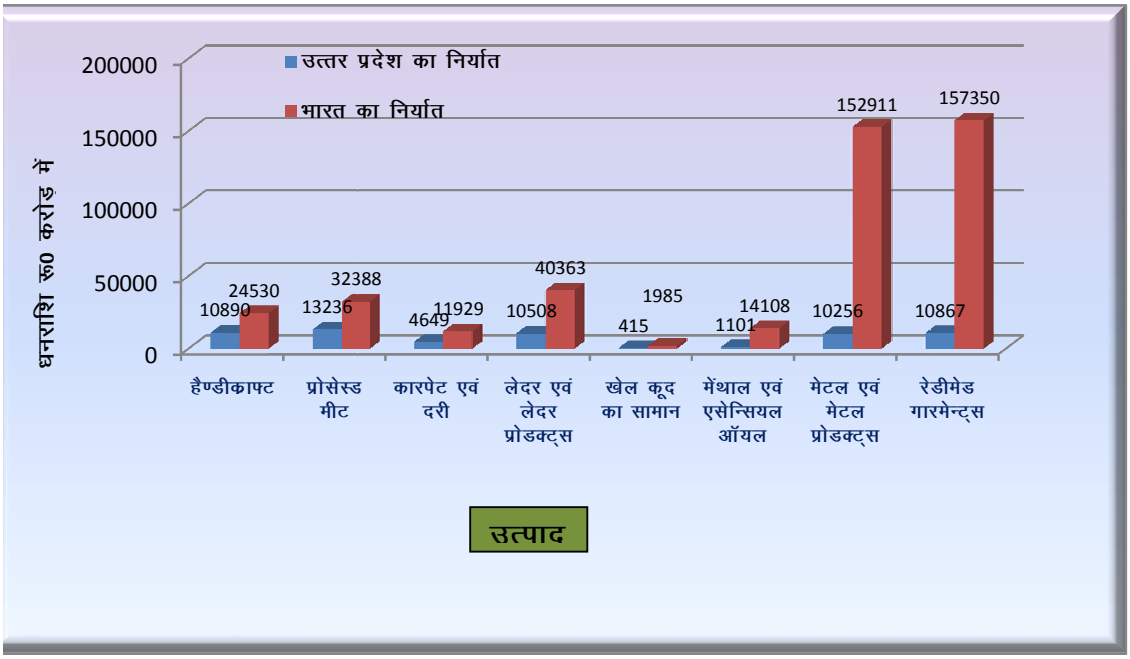

निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो द्वारा संचालित योजनाएं एवं कार्यक्रम एक दृष्टि में

ऑन लाईन सुविधाएं

- निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो द्वारा संचालित योजनाओं के सुगम, त्वरित एवं पारदर्शी क्रियान्वयन हेतु वेबसाईट ***www.epbupindia.com*** के माध्यम से निर्यातकों का पंजीयन/नवीनीकरण तथा विपणन विकास सहायता, गेटवेपोर्ट हेतु माल भाड़े पर अनुदान योजनान्तर्गत वित्तीय सहायता हेतु आवेदन तथा सहायता राशि के वितरण की आनलाईन सुविधा।

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निर्यातकों के लिए विपणन विकास सहायता

विदेशी मेला/प्रदर्शनी में भाग लेने हेतु	(क) स्टाल चार्जेज़ का 60 प्रतिशत अधिकतम रू. 1.00 लाख। (ख) हवाई यात्रा पर हुए व्यय का 50 प्रतिशत अधिकतम रू. 0.50 लाख। (प्रति निर्यातक प्रतिवर्ष अधिकतम तीन मेला/प्रदर्शनियों हेतु)
प्रचार, प्रसार, कैटेलाग, विज्ञापन, वेबसाइट हेतु	व्यय का 60 प्रतिशत अधिकतम रू. 0.60 लाख प्रति निर्यातक प्रति वर्ष।
विदेशी केताओं को नमूनों के प्रेषण हेतु	व्यय का 75 प्रतिशत अधिकतम रू. 0.50 लाख प्रति निर्यातक प्रति वर्ष।
गुणवत्ता नियंत्रण आईएसओ/ बीआईएस हेतु हेतु	व्यय का 50 प्रतिशत अधिकतम रू. 0.75 लाख प्रति निर्यातक प्रति वर्ष।

गेटवे पोर्ट तक निर्यात हेतु भेजे गये माल के भाड़े पर अनुदान

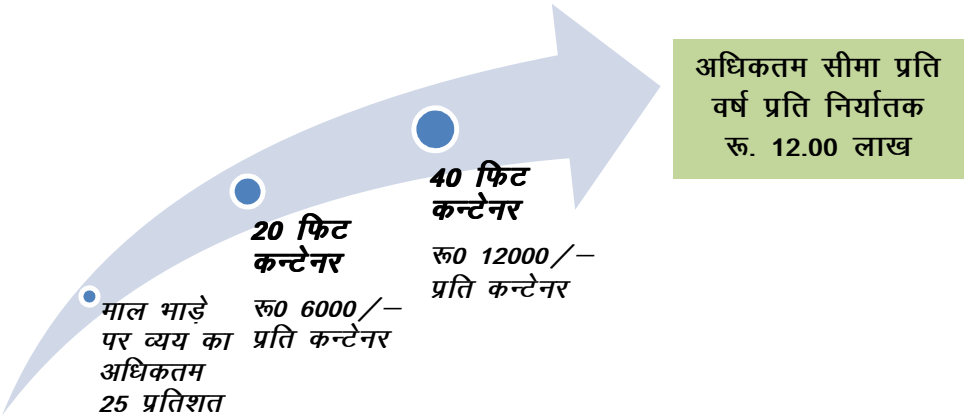

वायुयान भाड़ा युक्तिकरण योजना

- प्रदेश स्थित एयर कार्गो काम्पलेक्स लखनऊ तथा वाराणसी के माध्यम से किये जाने वाले निर्यात पर सहायता
- पैरिशिएबिल गुड्स जैसे–फल, फूल एवं सब्जियों के निर्यात पर भी सहायता।
- माल भाड़े का 20 प्रतिशत अथवा रू. 50.00 प्रति किग्रा. अधिकतम सीमा रू. 2.00 लाख प्रति निर्यातक प्रति वित्तीय वर्ष

निर्यातकों की क्षमता का विकास

- विशेषज्ञ संस्थाओं के सहयोग से प्रदेश के वर्तमान और भावी निर्यातकों हेतु विभिन्न निर्यात विषयक प्रशिक्षण एवं ज्वलन्त मुद्दों/समस्याओं पर केन्द्रित कार्यशाला गोष्ठी और सेमिनार

अध्ययन, सर्वे, ब्राण्ड प्रोत्साहन एवं आंकड़े उपलब्ध कराना

- आंकड़ों का संग्रह एवं विश्लेषण
- ई–मैगजीन, वेबसाइट एवं अन्य माध्यमों से सूचना, आंकड़े एवं निष्कर्षों का प्रसारण
- स्टेक होल्डर्स/निर्यातकों के मध्य प्रदेश में निर्मित प्रमुख हस्तशिल्प उत्पादों का जियोग्राफिकल इंडीकेटर (जी.आई.) के अन्तर्गत पंजीकरण कराते हुए ब्राण्ड प्रमोशन

राज्य निर्यात पुरस्कार

प्रतिवर्ष 25 उत्पाद श्रेणियों हेतु

- प्रदेश के निर्यातकों को प्रोत्साहित करने हेतु विभिन्न उत्पादों श्रेणियों के अन्तर्गत पुरस्कार
- कुल निर्यात मूल्य एवं वृद्धि दर के आधार पर प्रथम व द्वितीय पुरस्कार तथा समस्त श्रेणियों में से एक सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार

निर्यातकों को गोल्ड/सिल्वर कार्ड

- गोल्ड कार्ड–
  ऐसे निर्यातक जिनका निर्यात मूल्य रू. 50.00 लाख से अधिक होता है।
- सिल्वर कार्ड–
  ऐसे निर्यातक जिनका निर्यात मूल्य रू. 20.00 लाख से रू. 50.00 लाख के मध्य होता है।
- अद्यतन ब्यूरो द्वारा 692 निर्यातक इकाईयों को गोल्ड कार्ड एवं 61 निर्यातकों को सिल्वर कार्ड की प्रतिष्ठा प्रदान

भौगोलिक संकेतक जी.आई. पंजीयन एवं क्रियान्वयन

प्रत्येक भौगोलिक क्षेत्र में अपनी प्रसिद्धि का दावा निहित होता है। वस्तु और उसके उद्गम/उत्पादन के स्थान/क्षेत्र के मध्य विशिष्ट कड़ी का परिणाम भौगोलिक संकेत की उत्पत्ति है। भौगोलिक संकेतक अर्थात जी.आई. से हम किसी भी वस्तु या उत्पाद की तुरन्त पहचान कर सकते हैं कि उसका किस देश के किस क्षेत्र में उत्पादन होता है। इससे यह भी मालूम होता है कि कोई बनायी गयी वस्तु या उत्पादित सामग्री अथवा प्राकृतिक या कृषि उत्पाद अपने इलाके की खास विशेषता के लिए जाना जाता है।

विश्व व्यापार संगठन (डब्लूटीओ) ने अपने सदस्य देशों को ट्रिप्स समझौते के अन्तर्गत रजिस्टर्ड जी.आई. वस्तुओं और उत्पादों को व्यापार के लिए कानूनी संरक्षण देने की यवस्था की है। भारत में संसद द्वारा दिसंबर 1999 में वस्तुओं के भौगोलिक संकेत (पंजीयन व संरक्षण) अधिनियम पारित किया गया

- भौगोलिक संकेतक युक्त उत्पादों को उनकी विशेष गुणवत्ता एवं विशिष्टता के कारण विश्व बाजार में अधिक मूल्य प्राप्त होता है एवं तुलनात्मक रूप से इन उत्पादों की मांग अधिक होती है।
- जी.आई. एक सामूहिक संपत्ति है और इसलिए इसकी रक्षा करना सामूहिक जिम्मेदारी है।
- जी.आई. का पंजीकरण उत्पादों की सुरक्षा, उनके विपणन का अधिकार आदि विशेषाधिकार सुनिश्चित करता है। जी.आई. संकेतकों का अनाधिकृत उपयोग रोकने के लिए दण्ड का प्राविधान है।
- भौगोलिक संकेतकों की सुरक्षा आर्थिक और सांस्कृतिक रूप से बहुत अधिक उपयोगी एवं आवश्यक है।
- भौगोलिक संकेतक ग्रामीण विकास और उत्पादन, प्रसंस्करण और अन्य सम्बन्धित सेवाओं में नए रोजगार के अवसरों को बढ़ावा देने में सहायता करते हैं।
- सुरक्षित रूप से संरक्षित जी.आई. घरेलू और अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में सुरक्षा प्रदान करेगा।
- जी.आई. उत्पाद के साथ जुड़ा हुआ है और किसी व्यक्ति या किसी समुदाय के साथ नहीं।
- जी.आई. अधिकारों को स्थानान्तरित/बेचा नहीं जा सकता।
- पंजीकृत स्वामी और अधिकृत उपयोगकर्ता को प्रदत्त अधिकारों का दुरूपयोग होने पर कानूनी प्रक्रिया शुरू कर सकते हैं और राहत प्राप्त कर सकते हैं।
- अधिकृत उपयोगकर्ता के पास जी.आई. का उपयोग करने का विशेष अधिकार है।
- अपंजीकृत जी.आई. के मामले में कोई कानूनी कार्यवाही नहीं की जा सकती।
- भौगोलिक संकेतकों का पंजींयन चेन्नई स्थित भौगोलिक संकेतक पंजीयन, बौद्धिक सम्पदा कार्यालय चेन्नई में होता है।

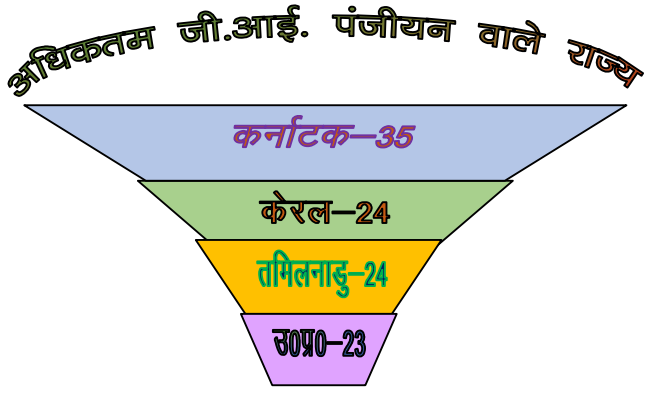

भौगोलिक संकेतक पंजीयन अधिकारी एवं पता- द रजिस्ट्रार,
भौगोलिक संकेत उपदर्शन,
बौद्धिक सम्पदा भवन,
इण्डस्ट्रियल इस्टेट, जी.एस.टी. रोड,
गुण्डी, चेन्नई-600032
ई-मेल- gir-ipo@nic.in वेबसाईट- ipindia.gov.in

उत्तर प्रदेश के भौगोलिक संकेतक (जी.आई.) प्राप्त उत्पाद व स्थान

	इलाहाबाद सुरखा अमरूद
	आगरा दरी हैण्डीकाफ्ट
	बनारस ब्रोकेड व साड़ी
	बनारस गुलाबी मीनाकारी
	फर्रूखाबाद प्रिन्ट्स
	फिरोज़ाबाद ग्लास
	भदोही हैण्डमेट कार्पेट
	कन्नौज इत्र
	कानपुर सैडलरी
	खुर्जा पाटरी
	निज़ामाबाद (आज़मगढ़) ब्लैक पाटरी
	वाराणसी ग्लास बीड्स

	सिद्धार्थनगर काला नमक चावल
	लखनऊ चिकन काफ्ट
	लखनऊ ज़रदोजी
	मलिहाबादी (लखनऊ) दशहरी आम
	मेरठ कैंची
	मिर्जापुर हैण्डमेड दरी
	मुरादाबाद मेटल काफ्ट
	सहारनपुर वुड काफ्ट
	वाराणसी लेकर वेयर व टॉएज
	बनारस ब्रोकेड व साड़ी (लोगो)
	वाराणसी मेटल रिपाउज काफ्ट

निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो के माध्यम से अब तक प्रदेश के 10 प्रमुख हस्तशिल्प उत्पादों का जी.आई. पंजीयन कराया गया है।

उत्तर प्रदेश निर्यात संवर्धन परिषद (यूपीईपीसी)

उत्तर प्रदेश जनसंख्या एवं क्षेत्रफल के दृष्टि से एक वृहद राज्य है, जिसके लाभ स्वरूप सांस्कृतिक एवं जलवायु विविधता के कारण प्रदेश उत्पाद विविधता की दृष्टि से समृद्ध है। इस प्रकार प्रदेश के विभिन्न उत्पादों का देश के निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान है। उत्पादों की निर्यात वृद्धि हेतु समन्वित प्रयास, नये बाजारों से सम्बन्धित अवसरों की पहचान, बेहतर विपणन सुविधायें तथा मूल्य संवर्धन, विभिन्न अन्तर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय व्यापार मेलों एवं बायर सेलर मीट में सहभागिता करते हुए उत्तर प्रदेश के ब्राण्ड प्रमोशन हेतु देश में प्रथम बार उत्तर प्रदेश निर्यात संवर्धन परिषद का गठन किया गया है।

उत्तर प्रदेश निर्यात संवर्धन परिषद, लखनऊ, उत्तर प्रदेश में स्थित है, यह कम्पनी की अधिनियम 2013 की धारा 8 के अर्न्तगत एक गैर–लाभकारी कम्पनी है।

उद्देश्य–

- व्यापार एवं उद्योग जगत की सक्रिय भागीदारी के माध्यम से निर्यात अवसरों की पहचान एवं लाभ उठाना
- निर्यात चुनौतियों/समस्याओं के समाधान हेतु राज्य एवं भारत सरकार के साथ समन्वय करना
- सहयोग एवं संरक्षण के द्वारा उत्तर प्रदेश राज्य से उत्पाद और सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देना
- विदेशी बाजारों में निर्यातकों को डिस्प्ले आदि की सुविधा उपलब्ध कराना
- इकाइयों के निर्यात के लिए अनुकूल वातावरण विकसित करने, नए बाजार के अवसरों हेतु अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों के गुणात्मक और पैकिंग मानको को अपनाने हेतु
- निर्यात हेतु नई इकाइयों को प्रेरित करने और निर्यात में पारंपरिक इकाइयों को मूल्य वृद्धि प्रदान करने हेतु
- गुणात्मक और प्रतिस्पर्धी कौशल और तकनीकों को विकसित करने हेतु निर्यातकों को सहायता प्रदान करना

उत्तर प्रदेश पहला ऐसा राज्य है, जिसकी अपनी निर्यात संवर्धन परिषद है।

सदस्यता

उत्तर प्रदेश राज्य में स्थापित निर्यातक इकाइयां यू.पी.ई.पी.सी. की सदस्य बनने हेतु पात्र हैं।

निर्धारित शुल्क

निर्यातक इकाईयां जिनका निर्यात टर्नओवर	पंजीकरण शुल्क	सदस्यता शुल्क
रू0 50.00 लाख से कम	रू0 1000.00	रू0 1500.00
रू0 50.00 लाख से अधिक	रू0 2000.00	रू0 2500.00

पैनल समितियां

प्रदेश के प्रमुख उत्पादों/सेवाओं के निर्यात संवर्धन हेतु रणनीति तैयार करने के उद्देश्य से 15 उत्पादों/सेवा समूहों के पैनल समितियों का गठन किया गया है। प्रत्येक पैनल समिति निम्नानुसार है:–

- एक संयोजक
- उत्पाद श्रेणी और सेवाओं का प्रतिनिधित्व करने वाले निर्यातक समूहों के चार प्रतिनिधि (सदस्य)

यूपीईपीसी के क्रियाकलाप

- ब्राण्ड यू.पी. को बढ़ावा देना
- प्रमुख प्रदर्शनियों और व्यापार मेले में भागीदारी
- व्यापार बैठक, सर्वेक्षण, सेमिनार और सम्मेलन आयोजित करना
- प्रशिक्षण और उत्पादकता
- व्यापार प्रतिनिधिमंडल और बायर सेलर मीट
- सदस्यों को निर्यात से संबंधित सुविधाएं
- विपणन विकास सहायता (एम.डी.ए.)
- सम्बन्धित विभागों से समन्वय
- प्रभावी विवाद निपटान तंत्र प्रदान करना
- वीजा सहायता

प्रदेश की उत्पादवार निर्यात उपलब्धि

इंजीनियरिंग गुड्स

- भारतीय इंजीनियरिंग क्षेत्र के बुनियादी ढांचे में निवेश वृद्धि से गत वर्षों में औद्योगिक उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।
- इंजीनियरिंग क्षेत्र का विनिर्माण और बुनियादी ढांचा क्षेत्र विकास में आधारभूत योगदान है तथा देश की अर्थव्यवस्था के लिए यह क्षेत्र रणनीतिक महत्व का है।
- वित्तीय वर्ष 2017 तक भारत में पूंजीगत सामान और इंजीनियरिंग का कारोबार 125.4 अरब अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद है।
- अलीगढ़ में उत्पादों के अनुसंधान एवं विकास तथा इंजीनियरिंग और मोटर वाहन उपकरण उत्पादों के निर्माण एवं पैकेजिंग, डिजाईनिंग एवं लेबिलिंग सुविधायें उपलब्ध कराने के लिये सामान्य सुविधा केन्द्रों (सी.एफ.सी) की स्थापना की गयी है।
- तुलनात्मक रूप से कम विनिर्माण लागत, उन्नत प्रौद्योगिकी और नवीनता तथा कुशल श्रमिकों की उपलब्धता के कारण इंजीनियरिंग क्षेत्र विदेशी निवेशकों को बेहद आकर्षित करता है।
- प्रदेश में इंजीनियरिंग उत्पादों के निर्माण एवं निर्यात में अलीगढ़, गाजियाबाद, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर), कानपुर, अग्रणी है।
- वर्ष 2016–17 में देश के कुल व्यापारिक निर्यात में इंजीनिरिंग गुड्स का योगदान 23.75 प्रतिशत रहा।
- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के अधीन इंजीनियरिंग गुड्स के निर्यात में सहयोग व समर्थन हेतु इंजीनियरिंग एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल ('वन्धना', चतुर्थ तल, 11, टालस्टाए मार्ग, नई दिल्ली) कार्य कर रही है।

रेडीमेड गारमेन्ट्स

- रेडीमेड व वस्त्रोद्योग क्षेत्र को जनवरी 2005 में मल्टी फाईबर एग्रीमेन्ट की समाप्ति के उपरान्त औद्योगिक विकास में महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त हुआ है।
- देश के कुल निर्यात में सिल्क गारमेन्ट्स के निर्यात में उत्तर प्रदेश प्रथम स्थान पर है तथा अन्य गारमेन्ट्स के निर्यात में प्रदेश की महत्वपूर्ण हिस्सेदारी है।
- रेडीमेड गारमेन्ट्स के प्रमुख निर्यात बाजार के रूप में सर्वाधिक निर्यात यूरोप (कपड़ा का 22 प्रतिशत एवं परिधान का 43 प्रतिशत) को किया जाता है।
- भारतीय रेडीमेड गारमेन्ट्स का सबसे बड़ा खरीददार देश संयुक्त राज्य अमेरिका (वस्त्रों का 10 प्रतिशत एवं परिधान का 32.65 प्रतिशत) है।
- रेडीमेड गारमेन्ट्स के अन्य प्रमुख निर्यात बाजार – संयुक्त अरब अमीरात, सऊदी अरब, कनाडा, बांगलादेश, चीन, तुर्की एवं जापान है।
- विश्व में रेडीमेड गारमेन्ट्स के निर्यात में देश की कुल हिस्सेदारी 3 प्रतिशत है।
- रेडीमेड गारमेन्ट्स का देश के कुल कपड़ा एवं परिधान निर्यात में महत्वपूर्ण योगदान (वस्त्र निर्यात का 45 प्रतिशत एवं 8.25 प्रतिशत हिस्सेदारी) है।
- रेडीमेड कपड़ों के निर्यात में परिधान निर्यात संवर्धन परिषद के अनुसार संचयी वार्षिक वृद्धि दर 18–20 प्रतिशत अनुमानित है।
- रेडीमेड गारमेन्ट्स के प्रदेश में प्रमुख उत्पादन क्षेत्र नोएडा (गौतमबुद्ध नगर), गाजियाबाद, वाराणसी, लखनऊ और कानपुर हैं।
- वर्ष 2016–17 में कुल राष्ट्रीय निर्यात में राज्य ने 7 प्रतिशत का योगदान दिया है।
- रेडीमेड गारमेन्ट उद्योग, देश में रोजगार (11.22 लाख) का दूसरा सबसे बड़ा प्रदाता है।
- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के अधीन रेडीमेड गारमेन्ट्स के निर्यात हेतु प्रतिवद्ध एपेरल एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (एनबीसी टावर्स, 15 भीखाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली) कार्यरत है।

आई.टी. एवं इलेक्ट्रानिक्स

- उत्तर प्रदेश उत्तर भारत का सबसे बड़ा आई.टी. हब है, जोकि कर्नाटक के बाद देश से सबसे अधिक साफ्टवेयर निर्यात करता है।
- दक्षिण भारतीय राज्यों के विपरीत उत्तर प्रदेश में आई.टी. उद्यम विशिष्ट क्षेत्रों यथा नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गाजियाबाद एवं लखनऊ में केंद्रित है।
- कंज्यूमर इलेक्ट्रानिक्स के निर्यात में उत्तर प्रदेश का देश में प्रथम स्थान है।
- इलेक्ट्रानिक्स सिस्टम डिजाईन और विनिर्माण देश में सबसे तेजी से बढ़ते क्षेत्रों में से एक है जिसमें वर्ष 2020 तक 400 अरब अमेरिकी डॉलर की वृद्धि होने की सम्भावना है।
- आईटी उद्यमों की स्थापना हेतु प्रदेश को विश्व स्तर पर उद्योग अनुकूल, प्रतिस्पर्धी, और विनिर्माण गंतव्य के रूप में जाना जाता है।
- प्रदेश में तीन इलेक्ट्रानिक्स विनिर्माण क्लस्टर स्थापित करने की योजना है।
- उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य में मोबाईल विनिर्माण इकाईयों की स्थापना के लिए 5000 करोड़ रुपये (यूएस डॉलर 7412.2 मिलियन) के निवेश समझौते किये हैं।
- आगामी दो–तीन वर्षों में इलेक्ट्रानिक सिस्टम डिजाईन एण्ड मैन्यूफैक्चरिंग क्षेत्र में 1 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश होना सम्भावित है।
- आई.टी. एवं इलेक्ट्रानिक्स उद्यम का उत्तर प्रदेश – दिल्ली –राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (एन.सी.आर.) एवं लखनऊ–कानपुर कारीडोर में तेजी से विकास हो रहा है। जहां लगभग सभी प्रकार के टिकाऊ उत्पादों का उत्पादन किया जा रहा है।
- देश के कुल निर्यात में आई.टी. एवं इलेक्ट्रानिक्स का योगदान लगभग 28 प्रतिशत है।
- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के अधीन आई.टी. एवं इलेक्ट्रानिक्स के निर्यात में सहयोग व समर्थन हेतु इलेक्ट्रानिक्स एण्ड कम्प्यूटर साफ्टवेयर एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (पीएचडी हाउस, फेस–।। तृतीय तल, एशियन गेम विलेज के सामने, नई दिल्ली) कार्य कर रही है।

कालीन एवं दरी

- अद्वितीय कलाकारी तथा उत्कृष्ट उत्पाद गुणवत्ता के कारण विश्व के बड़े बाजारों में भारतीय कालीन की मांग में निरन्तर वृद्धि के साथ ही अन्य उभरते बाजारों में भी इसकी मांग में वृद्धि हुई है।
- उत्तर प्रदेश देश के कुल कालीन उत्पादन में लगभग 90 प्रतिशत योगदान करता है तथा देश के लगभग 80 प्रतिशत कालीन बुनकर प्रदेश में कार्यरत हैं।
- प्रदेश के भदोही, मिर्जापुर एवं आगरा जनपद अपने कलात्मक कालीन उत्पादों के लिए विश्वविख्यात हैं।
- शाहजहांपुर एवं आगरा में बाजार की मांगों को ध्यान में रखते हुए पारम्परिक एवं नई डिजाईनों के सम्मिश्रण से कपास एवं ऊनी कालीन बनाये जाते हैं।
- कालीनों में उपयोग किये जाने वाले रंग मूलरूप से वनस्पति एवं अन्य प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त किया जाता है। यद्यपि सिंथेटिक रंग एवं रसायनों का भी उपयोग किया जाता है।
- अमेरिका और यूरोप भारतीय कालीन के दो सबसे बड़े बाजार हैं, जहां देश के कुल निर्यात का 70 प्रतिशत कालीन निर्यात होता है।
- जनपद भदोही में कालीन निर्यात के प्रोत्साहन हेतु माडर्न डाईंग हाऊस (सी.एफ.सी.) की स्थापना करायी गयी है।
- जनपद सीतापुर की हस्तनिर्मित दरी की ओवरसीज मार्केट में तेजी से मांग बढ़ रही है।
- वर्ष 2016–17 में देश के कुल कालीन एवं दरी निर्यात में राज्य का योगदान लगभग 39 प्रतिशत है।
- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के अधीन कालीन एवं दरी के निर्यात हेतु प्रतिवद्ध कारपेट एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (101–ए/1, कृष्णा नगर सफदरजंग इनक्लेव, नई दिल्ली) कार्यरत है

हस्तशिल्प

- भारतीय निर्यात में हस्तशिल्प क्षेत्र का महत्वपूर्ण योगदान है तथा उत्तर प्रदेश देश के हस्तशिल्प उत्पादों के निर्यात में प्रथम स्थान पर है।
- हस्तशिल्प व्यवसाय मूलतः देश के ग्रामीण/अर्द्धशहरी क्षेत्रों में फैला हुआ है तथा अधिकांश हस्तशिल्पियों को पारम्परिक रूप से वंशानुगत क्रम में अर्जित कला के साथ ही आधुनिक तकनीकों एवं डिजाईनों के सम्मिलन से विश्व स्तरीय उत्कृष्ट उत्पादों के निर्माण में महारत प्राप्त हैं।
- देश में कुल 2864 हस्तशिल्प क्लस्टर हैं जिनमें से सर्वाधिक 325 हस्तशिल्प क्लस्टर उत्तर प्रदेश में स्थित है।
- देश के निर्यात में हस्तशिल्प और हस्त कालीन की हिस्सेदारी लगभग 2.5 प्रतिशत है।
- मेटल एवं ग्लास आर्ट वेयर, कालीन, चिकनकारी जरी–जरदोजी, मिट्टी के बर्तन, रेशमी वस्त्र जैसे विभिन्न हस्तशिल्प उत्तर प्रदेश की विशिष्ट पहचान हैं।
- लखनऊ की चिकनकारी विश्व बाजार में अत्यंत प्रसिद्ध है। यह कढ़ाई की एक नाजुक कला है जहां सूई द्वारा फैब्रिक डिजाईन किया जाता है।
- देश के हस्तशिल्प निर्यात में प्रदेश के मुरादाबाद, अमरोहा, लखनऊ, आगरा, बरेली, फिरोजाबाद, नोएडा, भदोही, मिर्जापुर प्रमुख उत्पादक क्लस्टर हैं।
- जनपद लखनऊ व बरेली में ज़री उद्योग को वैश्विक मांग के अनुरूप डिजाईन डेवलपमेन्ट एवं हस्तशिल्पियों के प्रशिक्षण हेतु सामान्य सुविधा केन्द्र (सी.एफ.सी.) की स्थापना की गयी है।
- जनपद मुरादाबाद एवं फिरोज़ाबाद के हस्तशिल्प उद्योग को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर के उत्पाद तैयार करने तथा पैकेजिंग, डिजाईनिंग एवं लेबलिंग की सुविधा उपलब्ध कराये जाने हेतु सामान्य सुविधा केन्द्र (सी.एफ.सी.) की स्थापना की गयी है।
- वर्ष 2016–17 में देश के समग्र हस्तशिल्प निर्यात में राज्य का 44 प्रतिशत योगदान है।
- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के अधीन हस्तशिल्प के निर्यात में सहयोग व समर्थन हेतु एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल फार हैण्डीक्राफ्ट (6 कम्यूनिटी सेन्टर, द्वितीय तल, बसंत लोक, वसंत विहार, नई दिल्ली) कार्य कर रही है।

हथकरघा

- हथकरघा बुनाई भारतीय सांस्कृतिक विरासत के सर्वाधिक जीवन्त एवं समृद्ध पहलुओं में से एक है।
- हथकरघा क्षेत्र कम पूंजी, कम ऊर्जा खपत, पर्यावरण अनुकूल, नवाचारों के लिए खुलापन तथा बाजार मांग के अनुरूप उत्पाद तैयार करने की अनुकूलतः के कारण रोजगार सृजन में महत्वपूर्ण योगदान करते हैं।
- हथकरघा उद्योग पारम्परिक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को कला कौशल हस्तानान्तरण के साथ तकनीकी एवं डिजाईन आदि के क्षेत्र में अभिनव उपलब्धियों के संयोग से विकसित हुआ है।
- हथकरघा उत्पाद हस्तशिल्पियों की बहुमुखी मौलिक प्रतिभा सांस्कृतिक समृद्धता, विस्तृत विविधता तथा उत्कृष्ट कलात्मकता से परिपूर्ण होते हैं।
- हथकरघा क्षेत्र प्रारम्भिक जरूरतों से लेकर अति–सुन्दर एवं कलात्मक वस्त्रों की मांग को पूरी करता है। सुन्दर तथा कलात्मक वस्त्रों की बुनाई में कारीगर महीनों तक तल्लीनता से डूबे रहते हैं।
- उत्तर प्रदेश में हथकरघा एवं हस्तशिल्प आय एवं रोजगार का महत्वपूर्ण साधन हैं। उत्तर प्रदेश विशेषकर पूर्वी उत्तर प्रदेश में हजारों की संख्या में पावरलूम एवं हैण्डलूम में लाखों व्यक्तियों को रोजगार प्राप्त हुआ है।
- जनपद वाराणसी, मऊ, बाराबंकी, झांसी, बागपत, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर) हथकरघा उद्योग के मुख्य क्लस्टर हैं।
- जनपद वाराणसी में सिल्क साड़ी डिजाईन डेवलपमेन्ट सेन्टर तथा मऊ में माडर्न डाइंग एवं यार्न मेकिंग सुविधा हेतु सी.एफ.सी. की स्थापना करायी गयी है।
- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के अधीन हथकरघा के निर्यात में सहयोग व समर्थन हेतु हैण्डलूम एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (18, कैथेडरल गार्डेन रोड, नूनागमबक्कम, चेन्नई) कार्यरत है।

परफ्यूमरी, फ्रेगरेंस एवं एसेन्सियल ऑयल्स

- परफ्यूम फ्रेगरेंस एवं असेन्सियल ऑयल्स का उपयोग सौदर्य प्रसाधन, औषधि उद्योग फूड इण्डस्ट्री आदि में किया जाता है।
- पारम्परिक रूप से इत्र प्राकृतिक फूलों एवं उनके अर्क (सार) से तैयार किये जाते हैं, तथा विभिन्न प्रकार के असेन्सियल ऑयल्स का भी उपयोग इत्र तैयार करने में किया जाता है।
- कन्नौज प्राकृतिक रूप से तैयार किये जाने वाले इत्र का महत्वपूर्ण केन्द्र है जिसकी देश एवं विदेश में बड़ी मांग है।
- सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मत्रालय, भारत सरकार द्वारा यू.एन.डी.पी./यू.एन.आई.डी.ओ. तथा उत्तर प्रदेश सरकार की सहायता से कन्नौज के इत्र उद्योग को मूलभूत सुविधायें उपलब्ध कराये जाने हेतु सुगन्थ व स्वाद विकास केन्द्र (एफ.एफ.डी.सी.) की स्थापना की गयी है।
- एफ.एफ.डी.सी. का उद्देश्य एग्रो टेक्नालाजी और केमिकल टेक्नालाजी के क्षेत्र में प्राकृतिक तेल, सुगंध और स्वाद उद्योग एवं आर. एण्ड डी. संस्थानों के बीच समन्वयक के रूप में कार्य करना है।
- देश की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में किसान पारम्परिक रूप से खाद्यान उपज में संलग्न हैं जिसमें उन्हें बहुत कम लाभ प्राप्त हो रहा है। परफ्यूमरी एवं फ्रेगरेंस उद्योग के विकास से वैकल्पिक रूप से फूलों एवं औषधीय फसलों के उत्पादन में बेहतर अवसर उपलब्ध हो रहे हैं।
- जनपद कन्नौज, बाराबंकी, कानपुर, रामपुर, बरेली उत्तर प्रदेश इत्र उद्योग के मुख्य क्लस्टर हैं।

फार्मास्यूटिकल एवं मेन्थॉल

- भारत का फार्मास्यूटिकल उद्योग अत्यन्त प्रतिस्पर्धी मूल्यों पर उच्च गुणवत्ता की विश्वस्तरीय दवाओं का उत्पादन एवं निर्यात करता है। विकसित देशों के साथ ही तीसरी दुनिया के देशों में भारतीय फार्मास्यूटिकल उत्पादों की बड़ी मांग है।
- उत्तर प्रदेश दवाओं के निर्माण एवं निर्यात के महत्वपूर्ण केन्द्र के रूप में उभर रहा है। उत्तर प्रदेश की राष्ट्रीय बिक्री में लगभग 17 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी है तथा कुल टर्नओवर लगभग 90000 करोड़ रुपये है।
- प्रदेश में ज्यादातर इकाईयां गाजियाबाद, गौतमबुद्धनगर, लखनऊ, कानपुर, वाराणसी, अलीगढ़, गोरखपुर में केन्द्रित है।
- मेन्थॉल का उपयोग औषधि, सौन्दर्य प्रसाधन के उत्पादों को तैयार करने में किया जाता है।
- मेन्थाल एक कार्बनिक यौगिक है जिसे कार्न मिन्ट, पिपर मिन्ट तथा अन्य मिन्ट ऑयल्स से प्राप्त किया अथवा सिन्थेटिक रूप से तैयार किया जाता है।
- मेन्थॉल मिन्ट की खेती पंजाब, हरियाणा, उत्तराखण्ड तथा उत्तर प्रदेश एवं बिहार राज्यों में गंगा के मैदानों में की जाती है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से उत्तर प्रदेश में सबसे विस्तृत भू–भाग पर मेन्थाल/मिन्ट की कृषि की जाती है।
- मिन्ट उत्पादक क्षेत्रों में आसवन इकाईयों की गुणवत्ता में सुधार के लिये वर्ष 2010 के दौरान किये गये अध्ययन के लिए मेन्थाल/मिन्ट की खेती के तहत अपने अधिकतम क्षेत्रफल के आधार पर उत्तर प्रदेश के बाराबंकी जनपद को चुना गया।
- जनपद बाराबंकी, बदायूँ एवं रामपुर में मेंथाल उद्याोग को टेस्टिंग एवं डेस्टिलेशन की सुविधाएं उपलब्ध कराने हेतु सी.एफ.सी. की स्थापना करायी गयी है।
- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के अधीन फार्मास्यूटिकल के निर्यात में सहयोग व समर्थन हेतु बेसिक कैमिकल्स, फार्मास्यूटिकल एवं कास्मेटिक एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (झांसी कैसटल रोड, चतुर्थ तल, 7 कूपरेज रोड मुम्बई) कार्यरत है।

मार्बल, स्टोन, सिरैमिक एवं पॉटरी

- संगमरमर पर उत्कृष्ट नक्काशी एवं अद्वितीय डिजाईनों के लिए भारत विश्व विख्यात है।
- अपरिष्कृत स्टोन मैटेरियल के उत्पादन में भारत का सर्वोच्च स्थान है।
- वेस्ट मार्बल पाउडर का उपयोग टाईल्स निर्माण एवं कंक्रीट उत्पादन के लिए व्यापक रूप से किया जाता है।
- उत्तर प्रदेश स्टोन कार्विंग का एक समृद्व केन्द्र है जिसमें समय के मांग के अनुरूप परम्परा के साथ आधुनिकता का संगम हुआ है तथा कैन्डिल स्टैन्ड, ऐशट्रे, ज्वैलरी बाक्स जैसें गिफ्टेबल आइटम्स के साथ ही नक्काशी एवं डिजाइन युक्त पिलर्स तथा रेलिगंस आदि भी तैयार किये जाते हैं।
- राज्य में पाषाण शिल्प का उच्च कोटि का कार्य आगरा एवं मथुरा में किया जाता है।
- भारत में सिरेमिक उद्योग प्रमुख रूप से खुर्जा में मिट्टी के बर्तनों के लिए विख्यात रहा है।
- बुलन्दशहर स्थित खुर्जा में सिरेमिक उत्पादों के निर्माण के 500 से अधिक कारखाने कार्यरत है जिनमें विभिन्न प्रकार के दैनिक उपयोग के कलात्मक बर्तनों से लेकर सजावटी कलाकृतियों को तैयार किया जाता हैं।
- सिरेमिक उत्पादों को तैयार करने की कला यहां पर पारम्परिक रूप से कारीगरों के उत्कृष्ट कला कौशल एवं कारीगरी का उत्कृष्ट नमूना है।
- यहां के सिरेमिक उत्पाद अपनी उच्च गुणवत्ता तथा आकर्षक कलात्मकता के लिये विश्व विख्यात है।
- उद्यमियों को पैकेजिंग, डिजाईनिंग एवं लेबलिंग की सुविधा उपलब्ध कराये जाने हेतु खुर्जा (बुलन्दशहर) में सी.एफ.सी. की स्थापना करायी गयी है।

चर्म एवं चर्म उत्पाद

- चर्म एवं चर्म उत्पाद उद्योग निर्माण, रोजगार एवं निर्यात की विशाल सम्भावनाओं को समेटे हुए भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है।
- गत दो दशकों में चर्म व चर्म उत्पादों के निर्यात में महत्वपूर्ण वृद्धि परिलक्षित हुई है।
- भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा फुटवियर उत्पादक है, जिसका उत्पादन प्रतिवर्ष 700 मिलियन जोड़े से अधिक है।
- भारतीय चर्म उत्पादों का सबसे बड़ा बाज़ार जर्मनी है, जहॉ कुल निर्यात का 25 प्रतिशत हिस्सा निर्यात होता है। इसके अतिरिक्त यू.एस.ए., यू.के., फ्रांस व इटली अन्य मुख्य बाज़ार हैं।
- चर्म उद्योग के प्रोत्साहन हेतु उन्नाव में मल्टी स्किल डेवलपमेन्ट सेन्टर तथा टेस्टिंग लैब की स्थापना की गयी है।
- उत्तर प्रदेश में चर्म एवं चर्म उत्पाद उद्योग को डिजाइन एवं प्रोडक्ट डेवलपमेन्ट अनुसंधान एवं विकास तथा मानव संसाधन विकास हेतु विश्वस्तरीय संस्थागत सहयोग उपलब्ध है।
- कानपुर, उन्नाव व आगरा में मुख्य उत्पादन केन्द्रों के साथ उत्तर प्रदेश देश का प्रमुख चर्म एवं चर्म उत्पाद निर्माण करने वाला राज्य है।
- देश के कुल निर्यात में प्रदेश की हिस्सेदारी 26 प्रतिशत है।
- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के अधीन कालीन एवं दरी के निर्यात हेतु प्रतिवद्ध काउंसिल फार लेदर एक्सपोर्ट (लेदर सेन्टर, तृतीय/चतुर्थ तल, 53, सीडेन पेरियामीरेट, चेन्नई) कार्यरत है।

खेल के उत्पाद

- भारतीय खेल उत्पाद उद्योग 100 वर्ष से भी पुराना है तथा 1885 में खेल उत्पादों का निर्यात करने वाला पहला भारतीय औद्योगिक उत्पाद था।
- चीन और जापान के बाद भारत एशिया के सबसे बड़े खेल सामान निर्माताओं में से एक है।
- भारत फुटबाल, बालीबाल टेनिस बाल, किक्रेट बाल–बैट, हॉकी, बाक्सिंग आदि खेल उत्पादों का महत्वपूर्ण उत्पादन केन्द्र है।
- देश में जालधंर के बाद मेरठ देश का दूसरा सबसे बड़ा खेल उत्पाद क्लस्टर है।
- भारत के अधिकांश खेल सामान मेरठ में स्थापित 40 प्रमुख खेल उत्पाद निर्माता/निर्यातक कम्पनियों से यू.के., यू.एस.ए., जर्मनी. फ्रांस यू.ए.ई. आदि में निर्यात किये जाते हैं।
- वर्ष 2016–17 के निर्यात में राज्य ने 26 प्रतिशत का योगदान किया है जिसमें से 50 प्रतिशत जनपद मेरठ की हिस्सेदारी है।
- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के अधीन खेल के उत्पाद के निर्यात हेतु प्रतिवद्ध स्पोटर्स गुड्स एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (1–ई/6, स्वामी राम तीर्थ नगर, झण्डे वाला इक्सटेन्शन, नई दिल्ली) कार्यरत है।

एग्रीकल्चर एवं मीट

- प्रदेश की अर्थव्यवस्था के समग्र आर्थिक विकास में कृषि एवं पशुधन का महत्वपूर्ण योगदान है जो कि राज्य में रोजगार उत्पादन एवं आय का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत है।
- गेहूं, चावल, दाल, जौ, आदि प्रदेश के प्रमुख खाद्यान उत्पाद हैं, जिनकी खेती सर्वाधिक क्षेत्रफल पर होती है।
- उत्तर प्रदेश देश में खाद्यानों का सबसे बड़ा उत्पादक है। जिसका देश के कुल खाद्यान उत्पादन में 18.39 प्रतिशत योगदान है।
- भारत में विश्व की 55 प्रतिशत भैसें व 15 प्रतिशत गायें है तथा 121.8 मिलिटन दुग्ध उत्पादन के साथ भारत विश्व में प्रथम स्थान, अण्डा उत्पादन में तृतीय तथा मांस उत्पादन में सातवें स्थान पर है।
- उत्तर प्रदेश में पशुओं की संख्या में गत 5 वर्षो में 14 प्रतिशत की वृद्वि हुयी है। प्रदेश में 5 करोड़ मवेशी है। जिनमें 2 करोड़ 95 लाख गोवंशीय पशु हैं। कुल दूधारू मवेशियों की संख्या लगभग 2.50 करोड़ है।
- दुग्ध उत्पादन की दृष्टि से उत्तर प्रदेश अग्रणी राज्य हैं तथा राज्य में अन्य डेयरी उत्पादों का व्यापक पैमाने पर उत्पादन के साथ ही बड़े पैमाने पर मीट उत्पादन भी होता है।
- वैश्विक मानकों के अनुरूप राज्य में आधुनिक स्लाटर हाउसेज की स्थापना के लिए केन्द्र एवं राज्य सरकार द्वारा निजी क्षेत्र को सहयोग प्रदान किया जा रहा है।
- मीट/लेदर बाई प्रोडक्टस के प्रोत्साहन हेतु बरेली में कामन फैसिलिटी सेन्टर की स्थापना की गयी है।
- अलीगढ़, मुरादाबाद, रामपुर, मेरठ, बरेली एवं नोएडा में आधुनिक स्लाटर हाउसेज विद्यमान है।
- देश के निर्यात में राज्य लगभग 49 प्रतिशत योगदान करता है।

हार्टीकल्चर एवं फूड प्रोसेसिंग

- बढ़ती आय के स्तर और बदलते उपभोग पैटर्न में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग की भूमिका का निरन्तर विस्तार हो रहा है। उत्तर प्रदेश में कृषि उत्पादों का विस्तृत आधार होने के कारण इस क्षेत्र में अपार सम्भावनायें विद्यमान हैं।
- कृषि प्रसंस्करण के लिए कच्चे माल की व्यापक उपलब्धता, विशाल क्रेता बाजार, कुशल एवं अर्द्धकुशल श्रमिकों की उपलब्धता तथा पैकेजिंग, डिजाईनिंग व लेबलिंग की उच्च कोटि की सुविधाओं की उपलब्धता के दृष्टिगत उत्तर प्रदेश के समग्र विकास में यह क्षेत्र अपार सम्भावनायें समेटे हुए है।
- कृषि एवं खाद्यान्न प्रसंस्करण में उच्च गुणवत्ता एवं स्वास्थ्य मानकों के अनुरूप रॉ–मैटेरियल उपलब्ध कराने हेतु निरन्तर केन्द्र एवं राज्य सरकार के स्तर पर प्रयास किये जा रहे है।

- गन्ना राज्य में सर्वाधिक महत्वपूर्ण नगदी फसल है तथा राज्य में आलू, आम व अन्य औद्यानिक फसलों का व्यापक पैमाने पर उत्पादन किया जाता है।
- जैव प्रोद्योगिकी, कृषि प्रोद्योगिकी, रसायन टेक्नालॉजी जैसी प्रोद्योगिकियों में विकास का एकीकरण तथा तेजी से सुधार इस क्षेत्र के विकास के लिए आवश्यक है।
- ग्रीन फील्ड परियोजनाओं के विकास तथा इस क्षेत्र को अतिरिक्त प्रोत्साहन प्रदान करने के लिए प्रदेश में कृषि निर्यात क्षेत्र तथा फूड पार्कों की स्थापना की जा रही है।
- लखनऊ में सी.एफ.सी. फार पैकेजिंग एण्ड स्टोरेज फॉर फूट एण्ड वेजीटेबल परियोजना के अन्तर्गत किसानों को उत्पादों के मूल्यवर्धन एवं निर्यात के लिए आधारभूत सुविधायें उपलब्ध करायी गयी है।
- वर्ष 2016–17 में देश के कुल निर्यात में राज्य का योगदान लगभग 9 प्रतिशत रहा है।

पर्यटन, परिवहन एवं सेवा क्षेत्र

- महत्वपूर्ण धार्मिक, सांस्कृतिक धरोहरों को समेटे हुए उत्तर प्रदेश देशीय एवं अन्तर्देशीय पर्यटकों के लिए सबसे पसंदीदा राज्यों में एक है।
- सभी धर्मों के आस्था स्थल, ऐतिहासिक इमारतें तथा प्राकृतिक स्थल पर्यटकों को बरबस प्रदेश की ओर आकर्षित करते हैं।
- आगरा, वाराणसी, अयोध्या, मथुरा, देवाशरीफ, कुशीनगर, सारनाथ, लखनऊ, दुधवा नेशनल पार्क आदि महत्वपूर्ण पर्यटक स्थल है। आगरा भारतीय एवं विदेशी पर्यटकों के मध्य सर्वाधिक लोकप्रिय पर्यटन स्थल के रूप में प्रसिद्व है।
- पर्यटन उद्योग राज्य में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार सृजन एवं आय अर्जन का महत्वपूर्ण साधन है।
- पर्यटन उद्योग होटल, परिवहन, खान–पान आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण रोजगार के अवसरों का सृजन करते हैं तथा विदेशी मुद्रा अर्जन का महत्वपूर्ण स्रोत है।
- पर्यटन उद्योग के विकास के साथ ही प्रदेश में चिकित्सा पर्यटन आदि का तेजी से विकास हो रहा है।
- वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय भारत सरकार के अधीन सेवा क्षेत्र में निर्यात हेतु प्रतिवद्ध सर्विसेज एक्सपोर्ट प्रमोशन काउंसिल (तृतीय तल, 6ए/6 एनसीएचएफ बिल्डिंग, श्री फोर्ट, संस्थागत क्षेत्र, अगस्त क्रान्ति मार्ग, नई दिल्ली) कार्यरत है।

उत्तर प्रदेश के प्रमुख निर्यात उत्पाद एवं क्षेत्र

उत्पाद समूह	निर्यात उत्पाद	उत्पादक क्षेत्र
हस्तशिल्प	मेटल आर्टवियर	मुरादाबाद, अमरोहा, अलीगढ़
	वुडेन आर्टवियर	सहारनपुर, बिजनौर
	ग्लासवेयर	फिरोजाबाद
	चिकन जरी-जरदोजी	लखनऊ, बरेली, आगरा
	जेम्स एण्ड ज्वैलरी	मेरठ, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
	मार्बल नक्काशी	आगरा
	पाटरी	खुर्जा (बुलन्दशहर)
	कालीन एवं दरी	भदोही, मिर्जापुर, शाहजहांपुर
हथकरघा	होम फर्निशिंग उत्पाद	मऊ, वाराणसी, बाराबंकी, झांसी, बागपत, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
चर्म एवं चर्म उत्पाद	लेदर फुटवियर	आगरा, कानपुर, उन्नाव
	चर्म एवं चर्म उत्पाद, सैडलरी	कानपुर, उन्नाव
इंजीनियरिंग हार्डवेयर	लाक्स, बिल्डिंग हार्डवेयर एवं अन्य इंजीनियरिंग उत्पाद	अलीगढ़, गाजियाबाद, बुलन्दशहर, कानपुर, लखनऊ, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
वस्त्र	वस्त्र एवं रेडीमेड गारमेन्ट्स	कानपुर, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर), गाजियाबाद, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर व मेरठ
मीट	फ्रोजन एवं प्रोसेस्ड मीट	अलीगढ़, मुरादाबाद, रामपुर, बरेली, मेरठ, गाजियाबाद, उन्नाव, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
रसायन एवं एसेन्सियल ऑल्स	सुगंधित तेल एवं इत्र उत्पाद	बाराबंकी, कन्नौज, रामपुर, कानपुर, बरेली
कम्प्यूटर एवं सूचना प्रोद्योगिकी	हार्डवेयर/साफ्टवेयर	लखनऊ, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)
खेल का सामान	खेल का सामान	मेरठ
आटोमोबाईल	आटोमोबाईल कम्पोनेन्ट	गाजियाबाद, कानपुर, अलीगढ़, नोएडा (गौतमबुद्ध नगर)

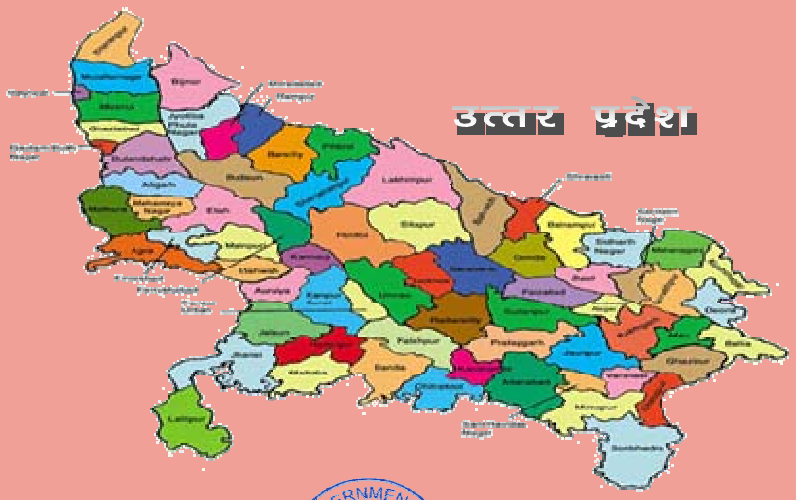

निर्यात प्रोत्साहन ब्यूरो

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम तथा निर्यात प्रोत्साहन विभाग, उत्तर प्रदेश

निर्यात भवन/एक्सपो मार्ट

8, कैन्ट रोड, कैसरबाग, लखनऊ–226001

फोन/फैक्सः 91–522–2202893

ई–मेल : upepblko@gmail.com

वेबसाईट : www.epbupindia.com